सत्यवीर मानव

ई-मेल-svmanav@gmail.com

शगुन

वह बरामदे में बैठा अपलक देख रहा था। दालान का जो कच्चा हिस्सा था, उसमें कई चिड़ियाँ मिट्टी में नहा रहीं थीं। चिड़ियों में कुछ छोटे-छोटे बच्चे भी थे। वे भी बड़ी चिड़ियों की नकल करने का प्रयास कर रहे थे। कभी एक, तो कभी दूसरी चिड़िया उन्हें ऐसा करते देखती, जैसे अपनी प्यार भरी नजरों से उन्हें सहला रही हो और फिर मग्न हो जाती उसी खेल में। उन्हें देखकर मुझे माँ से सुनी हुई बचपन की बात याद आ रही थी, "“जब चिड़िया मिट्टी में नहाती हैं, तो बारिश जरूर होती है।” “ ”

“छी-छी! रोहण तुम कितने गंदे बच्चे हो गये हो। कितनी बुरी तरह मिट्टी में सने हुए हो! और कपड़े भी गंदे कर लिए हैं।” पत्नी की गुस्से से भरी डपट सुनकर मेरी तंद्रा टूटी।

“मम्मी मैं तो मिट्टी से खेलकर आया हूँ।”

मुझे लगा, “रोहण भी चिड़िया के छोटे बच्चे-सा ही है, लेकिन इसकी मम्मी चिड़िया जैसी क्यों नहीं है?”

मैं फिर बह गया था।

“चटाक!” की आवाज के साथ मैंने चौंककर देखा— रोहण की आँखों में बादल घुमड़ आये थे।

क्षमा सिसोदिया

ई-मेल-:kshamasisodia@gmail.com

बटुआ

बेटी को लड़का बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रहा था, फिर भी पिता उस पर दबाव बनाए हुए थे...

"तुम दिमाग से सोचो। आखिर एक सुखी जिन्दगी के लिए क्या चाहिए ? लड़का विदेश में अच्छी नौकरी कर रहा है। उसके पिता का इतना बड़ा व्यापार है। दादा उच्चाधिकारी हैं। घर से सम्पन्न। जमीन-जायदाद। एक सुखी जीवन के लिए वहाँ सब-कुछ तो है।"

"हाँ, सब-कुछ है; लेकिन उसमें वो बात नहीं है, जो एक लड़की अपने जीवनसाथी के अंदर ढूँढती है।"

"कैसी बात करती हो!!!" आश्चर्यचकित हो पिता ने पूछा।

"जी हाँ, लड़के में वह चुम्बकीय प्रेम नहीं है, जिससे बँधकर एक अनजान लड़की किसी अजनबी के साथ सात फेरे ले लेती है।”

“आप माता-पिता हम बेटियों को आखिर कब तक भारी-भरकम बटुए के सहारे सुखी रहने के सपने दिखाते रहेंगे? मानती हूँ कि जिन्दगी के लिए पैसा जरूरी है लेकिन उससे अधिक प्रेम और अपनत्व जरूरी होता है। उसके भारी-भरकम बटुए के सहारे कब तक मेरी जिन्दगी सुखी रह पाएगी?...क्या आज तक आपका बटुआ माँ के सिसकते प्रेम को सुन पाया है...?”